

Padma Shri



SHRI V. L. NGHAKA

Shri V.L.Nghaka is one of the founding members of Assam Rastrabhasha Prachar Samiti, representing all North-East States. He set up the Mizoram Hindi Prachar Samiti in 1954, which became a pivotal turning point in the history of Hindi education in Mizoram. He is also the Founder President of Mizoram Hindi Prachar Samiti and the Founder President of Hindi Prachar Sangh, Mizoram (1954-59).

2. Born on 21st December, 1930 in Buhban, Shri Nghaka received M.A degree in 1976 from Guwahati University, M.Ed in 1980 from NEHU. He is the first to receive Siksha Visharad from Mizoram in 1954 from Misamari. He published 3 books in Hindi- (i) Hindi Grammar 1954, Middle School Text Book (ii) Hindi-Mizo Dictionary 1960 (iii) Hindi Pariksha Sahayika 1964. These are the first Hindi books in Nilgiri alphabets. Of the 23 books he authored, 2 books are prescribed as Middle School textbooks, viz., Hindi Grammar and Assam History 1962.

3. Under Shri Nghaka's Chairmanship on the Survey Board of Educationally Backward Areas inhabited by Chakma, Bru, Ranglow, Chowrai and others, a thorough and extensive survey was conducted and based on his detailed report, the Government of Mizoram introduced Compulsory Elementary Education in these areas. He worked as a Peacemaker, Interpreter and Negotiator between the Indian Army and the Mizo National Front during the 20 year insurgency, bailing out more than 100 Mizo prisoners from the Indian Army.

4. Shri Nghaka is the recipient of numerous awards and honours including Meritorious Award, as Circle Education Officer in 1978; Certificate on Tlawmngaihna at the Chapchar Kut Festival in 1984 (Tlawmngaihna is a Mizo code word which can be translated to selfless conduct and self-sacrifice for the service of others and society; Scouts and District Commissioner Warrant Award from the Bharat Scouts and Guides in 1989; Certificate of Appreciation from Mizoram Hindi Prachar Sabha on its Golden Jubilee, 2004 for his endless efforts towards the upliftment and propagation of Hindi in Mizoram; Appreciation Award by the Y.M.A Ramhlun South in 2010 for his charity work in helping the poor, promotion of Hindi Education and the heroic act of retrieving the body of a young girl from Tuilut, Kolasib; Appreciation Award by Senior Citizens Association in 2012; for his bravery and rescue of drowning victims; Appreciation Award by Senior Citizens Association in 2013; for his altruistic service during Mizoram Insurgency; Jubilee Award by Ramhlun South Presbyterian Church; for his service as a Sunday School Teacher for 50 years. Lifetime Achievement Award from Mizoram Hindi Prachar Sabha, 2020 for his endless efforts in propagating Hindi Education etc.

पद्म श्री



श्री वी. एल. झहाका

श्री वी.एल. झहाका असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं, जो सभी पूर्वोत्तर राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है। 1954 में उन्होंने मिजोरम हिंदी प्रचार समिति की स्थापना की, जो मिजोरम में हिंदी शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गई। वह मिजोरम हिंदी प्रचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष और हिंदी प्रचार संघ, मिजोरम (1954–59) के संस्थापक अध्यक्ष भी हैं।

2. 21 दिसंबर, 1930 को बूहबन में जन्मे, श्री झहाका ने 1976 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से एम.ए और 1980 में एनईएचयू से एम.एड. की डिग्री प्राप्त की। वह 1954 में मिसामारी से शिक्षा विशारद की उपाधि प्राप्त करने वाले मिजोरम में पहले व्यक्ति हैं। उनकी हिंदी में तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं— (i) हिंदी व्याकरण 1954, मिडिल स्कूल टेक्स्ट बुक (ii) हिंदी—मिजो डिक्शनरी 1960 (iii) हिंदी परीक्षा सहायिका 1964। नीलगिरी वर्णमाला में ये पहली हिंदी पुस्तकें हैं। उनके द्वारा लिखी गई 23 पुस्तकों में से 2 पुस्तकें अर्थात्, हिंदी व्याकरण और असम इतिहास 1962, मिडिल स्कूल की पाठ्यपुस्तकों के तौर पर निर्धारित हैं।

3. श्री झहाका की अध्यक्षता में गठित बोर्ड ने चकमा, ब्रू, रंगलो, चौराई इत्यादि शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में गहन और व्यापक सर्वेक्षण किया और उनकी विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर, मिजोरम सरकार ने इन क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा की शुरुआत की। 20 साल के विद्रोह के दौरान उन्होंने भारतीय सेना और मिजो नेशनल फ्रंट के बीच एक शांतिदूत, दुभाषिया और वार्ताकार के रूप में काम किया और भारतीय सेना से 100 से अधिक मिजो कैदियों को बाहर निकाला।

4. श्री झहाका को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं, जैसे कि 1978 में सर्किल शिक्षा अधिकारी के रूप में मेधावी पुरस्कार; 1984 में चापचरकुट फेस्टिवल में त्लावमंगैहना प्रमाण पत्र (त्लावमंगैहना एक मिजो कोड शब्द है, जिसका अर्थ निःस्वार्थ आचरण और दूसरों तथा समाज की सेवा के लिए आत्म-बलिदान है); 1989 में भारत स्काउट्स एंड गाइड्स की ओर से स्काउट्स एंड डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर वारंट पुरस्कार; मिजोरम में हिंदी के उत्थान और प्रचार-प्रसार हेतु उनके निरंतर प्रयासों के लिए मिजोरम हिंदी प्रचार सभा की स्वर्ण जयंती, 2004 के अवसर पर प्रशस्ति पत्र; गरीबों की मदद करने में उनके चैरिटी कार्य, हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने और तुइलुत, कोलासिब से एक किशोरी का शव निकालने के साहसिक कार्य के लिए 2010 में वाईएमए रामहलुन साउथ द्वारा सराहना पुरस्कार; उनकी बहादुरी और डूबते हुए लोगों को बचाने के लिए सीनियर सिटिजन्स एसोसिएशन द्वारा 2012 में सराहना पुरस्कार; मिजोरम विद्रोह के दौरान उनके परोपकारी सेवा के लिए सीनियर सिटिजन्स एसोसिएशन द्वारा 2013 में सराहना पुरस्कार; 50 वर्षों तक संडे स्कूल शिक्षक के रूप में उनकी सेवा के लिए रामहलुन साउथ प्रेस्बटेरियन चर्च द्वारा जुबली अवार्ड; हिंदी शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उनके निरंतर प्रयासों के लिए मिजोरम हिंदी प्रचार सभा, 2020 की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड आदि।